22-12-67

અભી ગમ ના દિના ખુશી દેને વાલે 2-1955

रिकार्ड:- मुझे प्यार के जिन्दगी देने वाले...। ओमशान्ति प्रातः क्लास

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों, आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा कहाँ निवास करती है। तख्त पर। यह बड़ा तख्त है ना। भृकुटी जैसे बैठने की उनकी कुर्सी है। है बहुत छोटी। यह ज्ञान बाप ही सिखलाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे तुम ने आधा कल्प भक्ति ही की है। वह कोई पढ़ाई नहीं है। यह तो पढ़ाई है। एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। भक्ति मार्ग में एमआबजेक्ट होती नहीं। उनके लिए हम कोई से डिबेट नहीं कर सकते। भल कोई भी धर्म वाला हो, हम तो उनकी आत्मा को ही देखेंगे। आगे शरीर को देखते थे। अब आत्मा को देखने से कहेंगे हम भाई को देखते हैं। और कोई सम्बन्ध नहीं। और सम्बन्ध से देखने से क्रिमनल आई काम करेगी। भाई अर्थात आत्मा समझने से क्रिमनल आई काम नहीं करेगी। हम भी आत्मा यह भी आत्मा है। आत्मा ही आरगन्स द्वारा बोलती है अथवा सुनती है। आत्मा के सिवाय दूसरी कोई बात याद ही नहीं आवेगी। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ अपन को आत्मा दूसरे को भी आत्मा देखना पड़े। यह प्रैक्टीस पक्की करनी है। पुरुषार्थ बिगर इतना ऊंच पद थोड़े ही मिल सकता है। मैं आत्मा हूँ यह अच्छी रीत पक्का करना है। ज्ञान है ही बिलकुल अलग। शंकराचार्य तुमको कहते हैं शास्त्रार्थ करो। अब इस में शास्त्रार्थ करने की बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। पढ़ कर नर से नारायण बनना है। अमरपुरी में जाना है इसके लिए पुरुषार्थ करना है या बैठ कर शास्त्रार्थ करना है। पढ़ाई में कब डिबेट होती है क्या। वह लोग ड्रामा को तो बिलकुल ही जानते नहीं। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। जिससे फिर हम आधा कल्प सुख पाते हैं। जो शिव बाबा हमको पढ़ा रहे हैं उनकी तुम बैठ पूजा करते हो। शिव बाबा ने इस पर मुरली भी चलाई थी, उनको समझना चाहिए जिस शिव बाबा को तुम पूजते हो वह तो ज्ञान का सागर है। हमको पढ़ा रहे हैं। वह ही नर से नारायण बनाने वाला है। उनकी पहले2 भक्ति भी अव्यभिचारी होती है। अभी हम उन द्वारा पढ़ कर पुरुषार्थ कर रहे हैं। लिखना चाहिए ना। बर के वह नहीं पढ़ेंगे। कोई न कोई उनके प्राईवेट सेक्रेट्री आद पढ़ेंगे। बोलो हम जानते हैं एक विचारे भूले हुये हैं। हमने शुरू में अव्यभिचारी पूजा की। अभी तो व्यभिचारी पूजा करते रहते। वह शिव बाबा हमको पढ़ा कर कहते हैं मन्मनाभव। देह के सर्व सम्बन्ध को छोड़ो। पतित-पावन मैं ही हूँ। तुम उनकी पूजा करते हो। वह हमको पढ़ा रहे हैं, राजयोग सिखला रहे हैं। परन्तु अभी देरी है। अभी उन्हों के कान पर इतना नहीं पड़ेगा। क्योंकि अभी तो उन्हों का राज्य है ना। तुम जानते हो यह भक्ति खतम हो जाती है। अभी अगर तुम उन्हों को ज्ञान दो तो प्रेजीडन्ट आद सब कहेंगे वाह! ब्रह्माकुमारियाँ इन्हों को ज्ञान देती हैं। ढेर के ढेर तुम्हारे पास आ जायेंगे। क्योंकि वह तो फिर भी सन्यासी हैं। वह गृहस्थी हैं। तुम ने सन्यासी को जीत लिया तो बाकी क्या चाहिए। इन्हों को पिछाड़ी में तुम ने ज्ञान दिया है। अभी तुम कोई बड़े मठ वाले को ज्ञान दो और इस तरफ आ जाये तो बहुत नाम हो जाये। मनुष्य ही मुंझ जाये। रीवलेशन हो जाये। बाप कहते हैं इन विचारों को कोई दोष नहीं है। मैं ही आये कर तुम बच्चों को यह बातें सुनाता हूँ। इसमें डिबेट आद करने की तो दरकार ही नहीं। यह है पढ़ाई। तुम्हारा है नारायणी नशा। मनुष्यों को तो है धन का नशा। गायन भी है किनकी दबी रहे धूर में... वह समय अभी आ रहा है। सफल होगी उनकी जो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करेंगे। यह तो पुरानी दुनिया खतम हो जानी है। सन्यास का वास्तव में अर्थ ही हाथ खाली करना। वह तो घर से ही बाहर चले जाते हैं। पैसा आद नहीं ले जाते हैं। जाकर सन्यासी ड्रेस पहन लेते हैं। अहमदाबाद में ऐसे बहुत स्थान हैं सन्यासियों के लिए भण्डारा लगा पड़ा है। उन्हों को बहुत माल मिलती रहती है। इस दुनिया से वैराग्य आ जाना है। तुम्हारे पास तो बहुत ताकत है। आधा कल्प लिए तुमको बहुत धन मिल जाता है। उन में इतनी ताकत नहीं तो धन भी नहीं मिलता। यह भी जब तमोप्रधान बन जाते हैं तो फिर लौट कर शहर में आ जाते हैं। उनको पकड़ सकते हो। परन्तु सब हैं

जैसे जैट लोग। ज्ञान का तो उन्हों को पता ही नहीं है। यह भी तुम जानते हो पढ़े हुये आगे अनपढ़े भर ढोयेंगे। ल०ना० के चरणों में सब झुकते हैं ना। उन से जाये धन मांगते हैं। फिर उन्हों ने पढ़ कर इतना ऊंच पद पाया है जो अभी तक मनुष्य उन से भीख मांगते रहते हैं। कितना ऊंचा फर्क है। इसमें साहस भी चाहिए। जीते जी मरना है। घर में बैठे हुये सब कुछ छोड़ देना, भुलाये देना इसको मरना कहा जाता है। बाबा यह सब कुछ आप का है। सब को मरना तो है ही। सभी को वाणप्रस्त में जाने की अवस्था है। यहां तो अकाले भी मर जाते हैं। वहां अकाले मृत्यु कब होती नहीं। अकाले मृत्यु का नाम ही नहीं होता। वहां है ही अमरलोक। कोई मरता नहीं। मनुष्य बन्दर आदि मरेंगे नहीं तो तब जायेंगे कहां। तुम कहेंगे योगबल से वहां एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। कहेंगे यह भी तो शरीर छोड़ना हुआ ना। परन्तु किस युक्ति से छोड़ते हैं यह भी समझने की बात है। तुम तो अब समझते हैं। बाप है ही गरीब निवाज़ तो पहले गरीब अबलाएं ही आती हैं। अबलाओं को बल देने वाला है बाप। आजकल तो मनुष्य अपन को कितना बलवान समझते हैं। गवर्मेन्ट को भी पत्थर मारने देरी नहीं करते। इस स्थापना में भी बाप को कितना विघ्न पड़ता है। यह सब ड्रामा में नूंध है। बाप को कोई ख्याल नहीं होता। समझते हैं यह नई बात नहीं।

सेकन्ड व सेकन्ड जो कुछ होता है, 5000 वर्ष पहले भी हुआ था, नथींग न्यु। म्युजियम स्थापन किया है। नथींग न्यु। 5000 वर्ष पहले भी राजाई स्थापन किया था इसके लिए यह म्युजियम रचा था श्री मत पर। बाबा यह बात बहुत वर्षों से कहते आते हैं यह म्युजियम में जरूर लिख दो। अखबार में पड़ता है 100 वर्ष आगे यह हुआ था। हम कहते हैं 5000 वर्ष पहले यह हुआ था। कितना फर्क हो जाता है। परन्तु मनुष्यों की है पत्थर बुधि। समझते नहीं। वह फिर तुमको चर्या समझते हैं। तब तो गाली आदि देते हैं। सुनी-सुनाई बातें तो बहुत हैं ना। कहते हैं कृष्ण ने भगाया। यह थोड़े ही पता है कि भगाया पटरानी बनाने।

अभी तो तुम समझती हो हम विश्व के महारानी बन रहे हैं। बाकी तुम भागों विकार के कारण। और कोई बात नहीं थी। तो यह सब बाप ही बच्चों को समझाते हैं। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को तुम ही जानते हो और कोई भी विचारे शंकराचार्य अथवा राजाएं आदि कुछ भी नहीं जानते। दुनिया में तो अनेक प्रकार के ढेर मत हैं। यहां तुमको मिलती है एक मत। यह किसको भी पता नहीं है परम पिता परमात्मा शिव ज्ञान का सागर है। पतितों को पावन बनाने वाला है। तो यह भी समझानी देनी पड़े। बाप कहते हैं मन्मनाभव। यह नालेज तुम कोई को भी दे सकते हो। बोलो तुम तो आत्मा हो। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं। जिसको ही फिर भोगना होता है। सतयुग में भोगना की बात नहीं होती। वहां भोगना से कैसे छूटते हैं सो बाप समझाते हैं। शास्त्रों में तो यम आदि की बातें कितनी बैठ बनाई हैं। आगे तुम भी कुछ नहीं जानते थे। बाप कहते हैं तुम अपने अन्दर से पूछो हम क्या थे। बिलकुल ही डर्टी ब्रूदस थे।

इन देवताओं के मानते थे आप सर्वगुण सम्पन्न .... हम नीच पापी हैं। आगे तो भक्ति भी बेसमझ की करते थे। अभी तो समझ मिली है। बाप कहते हैं यह है आसुरी सम्प्रदाय। सब रौरव नर्कवासी हैं। रौरव नर्क कलियुग के अन्त को कहेंगे। सभी पापात्माएं हैं। बिच्छू, टिन्डन नांग वलाएं आद हैं। कितना एक दो को दुःख देते हैं। यह है ही शैतान आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी बनते हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। फिर बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। अभी स्मृति आई है। अभी ... बन रहे हैं। आसुरी सम्प्रदाय में हम हैं नहीं। वह हैं बगुले, तुम हो हंस मोती चुगने वाले। दोनों इकट्ठे रह न सकें। ब्राह्मण बच्चों में भी कब2 लुन पानी हो पड़ते हैं। बाप कितना समझाते हैं। अपन को आत्मा समझो। दूसरे को भी आत्मा देखो। परन्तु यह टेव न होने कारण ज्ञान की धारणा न होने कारण फिर जात-पात के भेद में आ जाते हैं। आत्मा समझते नहीं हैं। आत्मा समझने से कोई जात-पात का भेद नहीं। यह हिन्दू है यह मुसलमान है। बाप कहते हैं देह के सम्बन्ध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। यह मारवाड़ी है यह फलाना है।

यह निकल जाना है। इसलिए बाप कहते हैं भाई2 क्रे देखो। यह टेव पड़ जानी चाहिए। ईश्वरी सम्प्रदाय भाई/2 आपस में कैसे लड़ेंगे। बाबा युक्ति बतलाते हैं। सर्जन है ना तो सर्जन को ख्याल रहता है ऐसी दवाई दें जो देहाभिमान छूट जाये। एक दो को भाई2 अर्थात आत्मा की दृष्टि से देखो। आत्मा भृकुटी के बीच रहती है। हमको आत्मा को ही ज्ञान देना है। उनको देखना है। जात-पात का भेद निकल जावे। नहीं तो लड़ेंगे, टीका टिपणी करेंगे। यह आमिल हैं यह भाई-बन्ध है। परन्तु इसमें तो भाई2 देखना है। यही मेहनत करनी पड़ती है। सन्यासियों को भी तुम समझा सकते हो परन्तु समझाने वाले बड़ी होशियार पावर फुल चाहिए। योग का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। कई बच्चे तो योग बल को पूरा समझते भी नहीं हैं आत्मा को दृष्टि से एक दो को देखें तो प्यार भी बहुत रहे। यह तो तुम अभी समझते हो। यह सारी आसुरी भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय है। परन्तु अपन को कोई समझते थोड़े ही हैं। तुम भी पहले नहीं समझते थे। पता ही नहीं था श्रx श्रेष्ट कौन होते हैं और कैसे बनते हैं। अभी तुम बन रहे हो। परन्तु कोई के तकदीर में नहीं है तो तद्बtतदबीर बन्नरी करते ही नहीं। बाप कहते हैं मैं एक रस सेवा सब की करता हूं। मुझे बुलाया ही है पतितों ने। तब तो कहते हैं हे पतित पावन आओ हमको x सुखधाम में ले चलो। अभी तो तुमको नफरत आती है समझते हो बरोबर हम विष्टा के कीड़े थे। अभी हम निकल आये हैं। यह काली दह है जहां सर्प- सर्पनियां रहती हैं। कृष्ण के लिए कहते हैं कालीदह में सर्प ने डंसा। अब सन्यासी लोग कहते हैं स्त्री सर्पनी है। यह थोड़े ही समझते थे हम भी थे। डंसते थे। पहले ते हमने डंसने शुरु किया। कालीदह तो है ना। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में थी जब कि सांवरा था। विषय वैतरणी नदी को कालीदह कहेंगे। बाप है बागवान। जानते हैं कौन गुलाब के फूल, कौन अक के फूल हैं। अक के फूल को कोई भी पसन्द नहीं करते। यह जैसे कड़वी फूल हैं। हाथ लगाओ तो आंख खराब हो जाये। ऐसे अक के फूल हैं। खुद भी समझते हैं हम कांटा हैं। किसको सुख देने वाला नहीं हूं। बेहद के बाप तो हरेक को सबको x जानते हैं ना। यह बेहद का टीचर भी है। सभी टीचरों का भी टीचर है। ऐसा कोई x टीचर होगा क्या जो कहे कि हम तुमको ऐसा(लक्ष्मी नारायण) बनाता हूं। इनके श्रीमत पर चलते हैं तो मानना चाहिए ना। भगवान का भी न मानेंगे तो कx औ बाकी किसका मानेंगे। बाप कहते हैं तुम भाई2 हो ना फिर विकार की दृष्टि क्यों जानी चाहिए। यह टेव बहुत अच्छी रीत डालनी है। महावीर-महावीरनियां को बहुत खबरदार रहना है। काम महाशत्रु है। इस माया रूपी ग्राह से वा मगरमच्छ से बड़ी सम्भाल रखनी है। कहां उनके मुख में न पड़ जाओ। माया बहुत जोर से चमाट लगाये बहुत ऊंच ते ऊंच विश्व के मालिक बनने से गिराये न दे। सदगुरु बाबा के निन्दक न बन जाओ। फिर ऊंच ठौर पा न सकेंगे। बड़ी भूल से बड़ा घाटा पड़ x जावेगा। जन्म-जन्मान्तर, कल्प, कल्पान्तर का। इसलिए बच्चों को बहुत खबरदार रहना है। इस संगम युग पर जब कि तुम ईश्वरीय औलाद हो तो आपस में भाई2 का रूहानी प्यार होना चाहिए। सतयुग में जनावर भी कितना प्रेम से चलते हैं। कोई की क्रिमनल आई नहीं होती जो धोखा खावे। बच्चों को माया से बड़ी खबरदार रहना है। बाबा सावधान रहने लिए तो xx रोज समझाते रहते हैं। तुम बच्चों को कदम कदम पर पदम हैं। अर्थात तुम पदम पति बन रहे हो। तो खबरदार भी बहुत रहना है। बाप-दादा बार बार बच्चों को सावधान करते रहते हैं। पतित बन अपना ~~प्रैक्टिस~~ दीवाला न मार देना। दिन प्रति दिन माया तमोप्रधान अवस्था धारण करती जा रही है। समझना चाहिए हमको कौन श्रीमत देते हैं। मानना चाहिए ना। भाई2 हो। कब भी विकार की दृष्टि न जाये। आत्मा को देखो। भाई2 को देखो। यह टेव पक्के रखो। इसमें ही मेहनत है।

अच्छा! मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति याद प्यार गुडमार्निंग।

एक नया सेन्टर बरोदा में खुला है,
जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं:—

BRAHMA KUMARIS
"RASHMIN" 7, CHANDRA NAGAR SOCIETY,
BEHIND NAZAR BAGH,
B A R O D A - 6